NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

M.H.D. - 15

हिन्दी उपन्यास-2

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Dr. Shanti Swaroop Gupt,* M.A. (Hindi), Ph.D.

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office:

1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878
E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

MRP ₹ 380/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

Retail Sales Office: 1507, First Floor, Nai Sarak, Delhi - 6 | Mob.: 8510009872, 8510009878

E-mail : info@neerajbooks.com Website : www.neerajbooks.com

© Copyright Reserved with the Publishers only.

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only

Typesetting by: Competent Computers, Printed at: Novelty Printing Press

Disclaimer/T&C

1. *For the best & up-to-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board/University.*
3. *These books are prepared by the author for the help, guidance and reference of the student to get an idea of how he/she can study easily in a short time duration. Content matter & Sample answers given in this Book may be Seen as the Guide/Reference Material only. Neither the publisher nor the author or seller will be responsible for any damage or loss due to any mistake, error or discrepancy as we do not claim the Accuracy of these Solutions/Answers. Any Omission or Error is highly regretted though every care has been taken while preparing, printing, composing and proofreading of these Books. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading, etc., are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. Any mistake, error or discrepancy noted may be brought to the publishers notice which shall be taken care of in the next edition and thereafter as a good gesture by our company he/she would be provided the rectified Book free of cost. Please consult your Teacher/Tutor or refer to the prescribed & recommended study material of the university/board/institute/ Govt. of India Publication or notification if you have any doubts or confusions regarding any information, data, concept, results, etc. before you appear in the exam or Prepare your Assignments before submitting to the University/Board/Institute.*
4. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
5. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
6. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book on any Website, Web Portals, any Social Media Platforms – Youtube, Facebook, Twitter, Instagram, Telegram, LinkedIn etc. and also on any Online Shopping Sites, like – Amazon, Flipkart, eBay, Snapdeal, Meesho, Kindle, etc., is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity of any NEERAJ BOOK in Printed Book format (Hard Copy), Soft Copy, E-book format by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
7. *The User agrees Not to reproduce, duplicate, copy, sell, resell or exploit for any commercial purposes, any portion of these Books without the written permission of the publisher. This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*
8. *All material prewritten or custom written is intended for the sole purpose of research and exemplary purposes only. We encourage you to use our material as a research and study aid only. Plagiarism is a crime, and we condone such behaviour. Please use our material responsibly.*
9. *All matters, terms & disputes are subject to Delhi Jurisdiction only.*

Get books by Post & Pay Cash on Delivery :

If you want to Buy NEERAJ BOOKS by post then please order your complete requirement at our Website www.neerajbooks.com where you can select your Required NEERAJ BOOKS after seeing the Details of the Course, Subject, Printed Price & the Cover-pages (Title) of NEERAJ BOOKS.

While placing your Order at our Website www.neerajbooks.com You may also avail the "Special Discount Schemes" being offered at our Official website www.neerajbooks.com.

No need to pay in advance as you may pay "Cash on Delivery" (All The Payment including the Price of the Book & the Postal Charges, etc.) are to be Paid to the Delivery Person at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us. We usually dispatch the books Nearly within 2-3 days after we receive your order and it takes Nearly 3-4 days in the postal service to reach your Destination (In total it take nearly 6-7 days).

Content

हिन्दी उपन्यास–2

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-3
Question Paper—December-2022 (Solved) 1-2
Question Paper—Exam Held in March-2022 (Solved) 1-4
Question Paper—Exam Held in August-2021 (Solved) 1-3
Question Paper—Exam Held in February-2021 (Solved) 1-4
Question Paper—December, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—June, 2019 (Solved) 1-2
Question Paper—December, 2018 (Solved) 1-3
Question Paper—June, 2018 (Solved) 1-3
Question Paper—December, 2017 (Solved) 1-4
Question Paper—June, 2017 (Solved) 1-5

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page
1.	यशपाल का उपन्यास साहित्य और 'झूठा सच'	1
2.	देश का विभाजन और 'झूठा सच'	20
3.	देश का भविष्य और 'झूठा सच'	27
4.	औपन्यासिक महाकाव्य वेफ रूप में 'झूठा सच'	42
5.	कृष्णा सोबती का कथा–साहित्य और 'जिन्दगीनामा'	70
6.	'जिन्दगीनामा' : उपन्यास की अंतर्वस्तु और कथा–शिल्प	82

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

7. 'जिन्दगीनामा' : प्रमुख पात्र एवं चरित्र–चित्रण 87

8. 'जिन्दगीनामा' : परिवेश और भाषा 110

9. धर्मवीर भारती का कथा साहित्य और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' 126

10. औपन्यासिक शिल्प : 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' 133

11. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' : चरित्र दृष्टि 147

12. 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' : भारती की लेखकीय दृष्टि 159

13. 'राग दरबारी' : श्रीलाल शुक्ल 184

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

हिन्दी उपन्यास–2

M.H.D.-15

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

प्रश्न 1. निम्नलिखित गद्यांशों में से किन्हीं दो की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए–

(क) मनुष्य कर्म का फल अवश्य पाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि हम जिन कर्मों को जानते नहीं उनके फल से नियंत्रित हैं, बल्कि यह कि हम अपने प्रयत्न और कर्म से स्वयं को, समाज को जैसा बनाने का प्रयत्न करते हैं, हमारा जीवन उसी के अनुसार बन जाता है। जीवन में प्रयत्न का समय कभी समाप्त नहीं होता। ....सुकर्म-सुकर्म की कसौटी ज्ञान और भावना है। ....कार्य और कर्म तो क्षण में समाप्त हो जाते हैं। वे मनुष्य को नहीं बाँध सकते। भावना और ज्ञान बहुत समय तक बने रहते हैं। उनसे एक के बाद दूसरे कार्य और कर्म होते रहते हैं, ज्ञान और भावना की मुख्य हैं।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-67, 'व्याख्या 14'

(ख) उस मुल्क में खुशहाल की उम्मीद न रख जिसमें बादशाह-रियाया एक-दूसरे से नाराज हैं। ख्वाब में मुल्क को आबाद नहीं देखता है जो लोगों के दिल गुलजार रखता है। जुल्म से खराब-बदनामी होती है। जुल्म के जरिए रियाया को तबाह करना ठीक नहीं, इसलिए कि वही हकूमत को पनाह देने वाली है।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-124, 'व्याख्या 8'

(ग) यह सच है, पर जब पूरी व्यवस्था में बेईमान है तो एक व्यक्ति की ईमानदारी इसी में है कि वह एक व्यवस्था द्वारा लादी गई सारी नैतिक विकृति को भी अस्वीकार करे और उसके द्वारा आरोपित सारी झूठी मर्यादाओं को भी, क्योंकि दोनों एक ही सिक्के दो पहलू होते हैं।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-177, 'व्याख्या 11'

(घ) वेदांत हमारी परम्परा है और चूंकि गुटबंदी का अर्थ वेदांत से खींचा जा सकता है, इसलिए गुटबंदी भी हमारी परम्परा है और दोनों हमारी सांस्कृतिक परम्पराएं हैं। आजादी मिलने के बाद हमने अपनी बहुत-सी सांस्कृतिक परम्पराओं को फिर से खोदकर निकाला है। तभी हम हवाई जहाज से यूरोप जाते हैं, पर यात्रा का प्रोग्राम ज्योतिषी से बनवाते हैं।

संदर्भ–प्रस्तुत गद्यांश श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास 'राग दरबारी' से उद्धृत है। शिवपालगंज के छंगामल इन्टर कॉलेज के अध्यापकों में गुटबन्दी थी। अध्यापकगण दो दलों में विभक्त थे। एक के नेता थे प्रिंसिपल तथा दूसरे दल की अगुवाई कर रहे थे खन्ना मास्टर। इसी गुटबन्दी को लेकर उपन्यासकार वर्तमान भारत में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में व्याप्त इस रोग पर व्यंग्य करता हुआ, उसे दार्शनिक सिद्धांत का रूप देता हुआ उसकी तुलना वेदान्त के अद्वैत दर्शन से करता है।

व्याख्या–अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए कि गुटबंदी का मूल हमारी परंपराओं में है, वह वेदांत को गुटबंदी से जोड़ता है। वह आगे कहता है कि आधुनिक युग के दंभ में हमने अपनी अनेक परंपराओं को छोड़ दिया था किंतु आजादी के बाद अनेक परंपराओं को फिर से जीवित किया गया है। यूरोप जाने के लिए यात्रा का कार्यक्रम ज्योतिषी से निकलवाना हमारी परंपरा और आधुनिकता की गुटबंदी का प्रतीक है।

विशेष–1. हिन्दी के कथाकारों पर विशेषतः जैनेन्द्र जी पर कटाक्ष, जो कथा के बीच-बीच में दर्शन का तत्त्व-चिंतन का डोज पिलाते हैं।

2. आध्यात्मिक एकीकरण या लय की बात 'प्रसाद' ने 'आंसू' में कही है और वह बताते हैं कि ब्रह्म भी जीव से एक होने के लिए उतना ही आतुर रहता है, जितना जीव ब्रह्म से एक होने के लिए व्याकुल।

प्रश्न 2. 'राग दरबारी' में लेखक ने ग्रामीण समाज के किन अंतर्विरोधों और विडम्बनाओं को उजागर किया है? उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-201, प्रश्न 13

इसे भी देखें–जिस भूखंड, काल और सामाजिक परिस्थितियों में उपन्यास के पात्र क्रियाकलाप करते हैं, घटनाएं घटित होती हैं, वे सब मिलकर परिवेश या देशकाल का निर्माण करते हैं। उपन्यास को जीवंत बनाने के लिए, उसमें चित्रित जिन्दगी को स्वाभाविक और यथार्थ रूप देने के लिए आवश्यक है कि देशकाल का चित्रण

उपयुक्त पृष्ठभूमि का काम करे। उपन्यास में वातावरण दो प्रकार का होता है–आन्तरिक वातावरण तथा बाह्य वातावरण। आन्तरिक वातावरण के अन्तर्गत घटनाओं और परिस्थितियों का चित्रण तथा पात्रों की मानसिक दशा का चित्रण होता है और बाह्य वातावरण की सृष्टि करते समय लेखक के चारों ओर के परिवेश-प्रकृति, रहन-सहन की पद्धति, उन स्थानों का अंकन होता है, जहां घटनाएं घटती हैं।

'राग दरबारी' की कथावस्तु का केन्द्र है शहर से कुछ दूर बसा शिवपालगंज नामक कस्बा, जो न पूरी तरह गांव है और न पूरी तरह शहर। शिवपालगंज एक ऐसा कस्बा है, जहां देश की भ्रष्ट राजनीति और लोकतांत्रिक संस्थाओं की कार्यपद्धति ने उसे पृथ्वी पर नरक बना दिया है। उपन्यास के कथासूत्र शिवपालगंज में व्याप्त कुरूपता, जहालत, फूहड़पन, खोखलेपन, बगुलाभक्ति तथा दंभ को उद्घाटित करते हैं। समाज और जीवन में व्याप्त विसंगतियों के सत्य को उसकी पूरी कटुता, कुरूपता और नग्नता के साथ उजागर करने के लिए लेखक ने अपने उपन्यास में न तो कोई लम्बी-चौड़ी कहानी कही है, न इसमें कोई व्यक्ति नायक है और न लेखक का उद्देश्य पात्रों का मनोविश्लेषण करके मानव मन की सूक्ष्म एवं जटिल भावनाओं का दिग्दर्शन करना या उसकी चीर-फाड़ करना ही है। यह रचना परिवेश प्रधान है, पर यह परिवेश एक गांव का नहीं, देश के लगभग सभी गांवों का है। सारे मुल्क में शिवपालगंज बसे हुए हैं। शिवपालगंज का परिवेश अपनी व्याप्ति में यथार्थवादी और जीवन्त है और उसके अंकन द्वारा लेखक हमें क्षुब्ध करता है, आक्रोश जगाता है, सोचने को बाध्य करता है। वह संवेदना तथा अनुभूति से साक्षात्कार कराता है और यही उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

प्रश्न 3. 'सूरज का सातवां घोड़ा' उपन्यास के कथा-शिल्प की विशेषताएं बताइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-140, प्रश्न 4, पृष्ठ-143, प्रश्न 5

प्रश्न 4. 'जिन्दगीनामा' उपन्यास के महत्त्व और प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–हिन्दी उपन्यास के इतिहास को देखें, तो पता लगता है कि हिन्दी उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों के नाम उपन्यास के प्रधान पात्र–नायक या नायिका–के नाम के आधार पर रखे हैं। जैसे माधव जी सिंधिया, शेखर : एक जीवनी, निर्मला, सुखदा, मृगनयनी आदि। कुछ उपन्यासों के नाम केन्द्रीय घटना-स्थल को ध्यान में रखकर रखे गये हैं–गढ़ कुंडार, मुर्दों का टीला। कुछ लेखकों ने उपन्यास की केन्द्रीय घटना को उपन्यास के नामकरण का आधार बनाया है–त्यागपत्र, गबन। भाषा में सांकेतिकता और प्रतीकात्मता का महत्त्व जानने और समझने के परिणामस्वरूप आजकल के अधिकांश उपन्यासों के नाम प्रतीकात्मक रखे जाने लगे हैं। 'जिन्दगीनामा' का नामकरण भी इसी पद्धति पर किया गया है। यह प्रतीकात्मक है। इससे न केवल उपन्यास के कथ्य का संकेत मिलता है, अपितु लेखिका की विचारधारा, सोच, इतिहास के प्रति दृष्टि, मानव के अस्तित्व और श्रेय के प्रति उसके सरोकार तथा वतन से प्यार और उससे बिछुड़ने की गहरी वेदना का भी पता चलता है।

उपन्यास का शीर्षक है–जिन्दगीनामा। उपशीर्षक है– जिन्दा रुख तथा उसके बाद एक पृष्ठ पर पंक्तियां हैं–इतिहास/जो नहीं है और इतिहास/जो है। इन पंक्तियों के नीचे काव्य-पंक्तियों में इन पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट किया गया है। उपन्यास के नामकरण का औचित्य जानने के लिए शीर्षक, उपशीर्षक तथा इन पंक्तियों पर विचार करना होगा।

सबसे पहले उपन्यास के शीर्षक 'जिन्दगीनामा' पर विचार करें। जिन्दगीनामा का शाब्दिक अर्थ है, जिन्दगी की कहानी। यह शब्द 'शाहनामा', 'बाबरनामा' की तर्ज पर बना है और जिस प्रकार शाहनामा और बाबरनामा में दो बादशाहों के जीवन की कहानी कही गयी है, ठीक उसी प्रकार जिन्दगीनामा में भी किसी की कहानी होनी चाहिए। अब प्रश्न उठता है कि लेखिका ने इस उपन्यास में किसकी कहानी कही है? निश्चय ही शाह जी की नहीं, यद्यपि शाह जी उपन्यास के केन्द्रीय पात्र हैं।

शाह जी का परिवार उपन्यास की अनेक घटनाओं और प्रसंगों से जुड़ा है, परन्तु लेखिका का अभीष्ट शाह परिवार की कहानी कहना भी नहीं है। वस्तुतः यह एक विशेष कालखंड (1905-1915 ई.) का विशेष चरित्रों का विशेष परिवेश का आख्यान है। इस आख्यान को मात्र डेरा जट्टा का आख्यान नहीं कहा जा सकता। इसके माध्यम से लेखिका ने विभाजन-पूर्व के पंजाब के जनजीवन की कहानी प्रस्तुत की है। यह कथा सांझी पंजाबी संस्कृति की कथा है। इसमें पंजाब के इसी खुशहाल जीवन तथा लोक-संस्कृति की विविध झलकियां दिखाई गयी हैं। इसमें पंजाब के जातीय जीवन का पूरा परिदृश्य साकार और मूर्त हो उठा है। इसमें जिन्दगी अपनी बहुरूपता में, विविधता में धड़कती है और उसके अनेक छवि-चित्र बारीक ब्यौरों के साथ प्रस्तुत किये गये हैं। इसमें एक भूखंड की जिन्दगी का बहाव भागीरथी के बहाव की तरह नैरंतर्य लिए हुए है, इसीलिए यह 'जिन्दगीनामा' है। इस उपन्यास का केन्द्रीय चरित्र कोई पात्र न होकर जिन्दगी है।

'मैला आंचल' की भूमिका से शब्द उधार लें, तो 'जिन्दगीनामा' में भी शूल और फूल, कीचड़ और चंदन, धूल और गुलाब सब मौजूद हैं। लेखिका ने किसी से भी अपना दामन नहीं छुड़ाया है।

अब उपन्यास में उपशीर्षक 'जिन्दा रुख' पर विचार करें। यह प्रतीकात्मक है। जिन्दा रुख प्रतीक है, अविभाज्य पंजाब की सांझी संस्कृति का। उस संस्कृति का जिसमें धर्म, संप्रदाय, जाति, अमीर-गरीब का भेद नहीं था। सब भाई-भाई की तरह एक-दूसरे के सुख-दुःख में शरीक होते थे।

रुख का अर्थ है, वृक्ष तथा जिन्दा रुख का अर्थ है, ऐसा वृक्ष जो हरा-भरा है, विशालकाय है, जिसकी सघन छाया है। जिस तरह से जिन्दा रुख सुन्दर होता है, उसकी विशालकाय, हरी-भरी, छाया के नीचे थके-मांदे यात्री कुछ क्षण विश्राम करते हैं। गांव वाले

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS
www.neerajbooks.com

हिन्दी उपन्यास–2

यशपाल का उपन्यास साहित्य और 'झूठा सच' 1

प्रश्न 1. यशपाल के जीवन, व्यक्तित्व तथा कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दीजिये।

उत्तर वस्तुतः रचनाकार की संवेदना के गठन में उसके जीवनानुभव की व्यापक भूमिका होती है। यशपाल के जीवनानुभव का क्षेत्र समृद्ध और वैविध्य से भरा हुआ है। भारत में अंग्रेज-विरोधी क्रांतिकारी आंदोलन में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान था, उसकी छाया उनके संपूर्ण लेखन और चिंतन में दृष्टिगत होती है। भारत-विभाजन का दर्द उन्होंने अनुभव किया था, इस पीड़ा की गंभीर अभिव्यक्ति उनके '*झूठा सच*' उपन्यास में मिलती है।

यशपाल का जन्म 3 दिसम्बर, सन् 1903 को फिरोजपुर छावनी में हुआ था। उनके पिता का मूल निवास स्थान कांगड़ा था। उनकी आर्थिक स्थिति अति सामान्य थी। यशपाल के पिता और चाचा के बीच बढ़ते कलह के कारण इनके घर की आर्थिक स्थिति और भी अधिक खराब हो गई। आर्थिक विपन्नता से लेखक के मन पर गहरा आघात लगा। वे इसे जीवन भर नहीं भूल पाए। उनके साहित्य में हमें ऐसे अनेक पात्र मिलेंगे, जो अभाव और मजबूरी के बीच जीने को विवश हैं। यशपाल की माता जी बदहाली की स्थिति में कांगड़ा छोड़कर पंजाब आ गईं। उनके सगे-संबंधी आर्य समाज के आंदोलन से जुड़े हुए थे। इसलिए फिरोजपुर की एक आर्य कन्या पाठशाला में अध्यापिका के रूप में नियुक्ति में कोई उन्हें विशेष परेशानी नहीं हुई। यशपाल ने सातवीं कक्षा तक की शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी से प्राप्त की। उसके बाद की शिक्षा डी.ए.वी. लाहौर तथा मनोहरलाल हाई स्कूल में प्राप्त की। यहीं से वे सन् 1921 में प्रथम श्रेणी में मैट्रिक की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। इसी समय हाथ से लिखी पत्रिका में उन्होंने '*अँगूठी*' नामक अपनी प्रथम कहानी लिखी। असहयोग आंदोलन में भाग लेते हुए विदेशी कपड़ों की होली जलाई।

मैट्रिक की परीक्षा पास करके वे पंजाब नेशनल कॉलेज के विद्यार्थी बने। इस समय देश में असहयोग आंदोलन छिड़ा हुआ था। विदेशी शासन के विरोध में आंदोलन उग्र रूप धारण करता जा रहा था। इसी बीच चौरा-चौरी का कांड हुआ। गाँधी जी ने आंदोलन को स्थगित कर दिया। आंदोलन स्थगित होने से देश के नवयुवकों में बेहद निराशा व्याप्त हुई। जिन छात्रों ने आंदोलन की सफलता के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया था, वे असंतुष्ट थे। उन्हीं में से कुछ ने सशस्त्र क्रांति का मार्ग चुना। इन छात्रों में यशपाल भी थे। नेशनल कॉलेज में उनका संपर्क सुखदेव, भगतसिंह तथा चन्द्रशेखर आजाद जैसे सशस्त्र क्रांतिकारियों से हुआ। सामूहिक सशस्त्र क्रांति द्वारा अपने देश से विदेशी सत्ता का उन्मूलन करना इन क्रांतिकारियों का उद्देश्य था। सैण्डर्स की हत्या, लाहौर बम कांड आदि में यशपाल की परोक्ष भूमिका थी। 1928 ई. में वे लॉर्ड इरविन की स्पेशल ट्रेन के नीचे विस्फोट का आयोजन करने तथा दिल्ली और रोहतक में बम निर्माण के काम में सक्रिय रहे। सन् 1931 में '*हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातन्त्र सेना*' के सेनापति '*आजाद*' के शहीद होने के उपरान्त आप इस संगठन के सेनापति नियुक्त हुए। 1932 ई. में पुलिस के साथ एक मुठभेड़ में इस्लामाबाद गिरफ्तार हुए। 1938 ई. में जेल से रिहा होकर वे लखनऊ में रहते हुए साहित्य रचना की ओर प्रवृत्त हुए।

जेल से मुक्त होने के बाद उन्होंने माता की बची-बचायी पूँजी तीन सौ रुपयों से '*विप्लव*' पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया। 1940 ई. में क्रांतिकारी विचारों से ओत-प्रोत लेखों के कारण वे फिर गिरफ्तार कर लिए गए। बाध्य होकर उन्हें '*विप्लव*' का संपादन बंद कर देना पड़ा। उन्होंने स्वतंत्र रूप से साहित्य सृजन करते हुए कहानी, उपन्यास, निबंध, संस्मरण लिखे। स्वातंत्र्योत्तर

पीढ़ी के रचनाकारों में विचारधारा और लेखन के स्तर पर उन्होंने एक अलग पहचान बनाई। जीवन के अंतिम समय में भी क्षीण होती आँख की रोशनी के बीच वे रचनारत रहे। 1976 ई. में उनका निधन हुआ।

यशपाल के विषय में राहुल सांकृत्यायन ने लिखा है "*वे सीधे किताबों और विद्यालयों के भीतर से साहित्य के क्षेत्र में नहीं उतरे, बल्कि उन्होंने जीवन के बहुत कडुए-मीठे अनुभव हासिल किए हैं। उनकी लेखनी में जो पारदर्शिता, विविधता देखने में आती है, वह इसी जीवन की देन है।*" सामंती समाज के विघटन और पूँजीवादी व्यवस्था के आगमन के बीच किस प्रकार का दबाव मानवीय संबंधों पर पड़ रहा था, उसकी पहचान यशपाल के साहित्य में गहरी है। लेकिन इस कारण कहीं-कहीं उनके विश्लेषण जड़ और यांत्रिक हो गए हैं। सिद्धांतों को अत्यधिक महत्त्व देने के कारण वे मानवीय जीवन के जटिल यथार्थ की अनदेखी कर जाते हैं। यह उनके साहित्य की बड़ी सीमा है। लेकिन स्थितियों की जटिलता का विश्लेषण करने की उनकी क्षमता अचूक और धारदार है।

यशपाल प्रेमचंदोत्तर पीढ़ी के प्रतिनिधि कथाकार हैं। कहानी और उपन्यास में उन्होंने अपना विशिष्ट योगदान दिया है। '*पिंजरे की उड़ान*' (1939), '*वो दुनिया*' (1942) '*ज्ञानदान*' (1943), '*तर्क का तूफान*' (1943) '*भस्मावृत चिंगारी*' (1949), '*फूलों का कुर्ता*' (1949), '*धर्मयुद्ध*' (1950), '*चित्र का शीर्षक*' (1951), '*तुमने क्यों कहा था मैं सुंदर हूँ*' (1954), '*उत्तमी की माँ*' (1953), '*सच बोलने की भूल*', (1962), '*खच्चर और आदमी*' (1967) यशपाल के प्रतिनिधि कहानी संग्रह हैं। उनकी कहानी में शोषित और पीड़ितों के प्रति सहानुभूति है। उनकी मान्यता है कि मनुष्य रूढ़ि, अंधविश्वास, अज्ञान और आर्थिक-सामाजिक दबाव के विरुद्ध संघर्ष करने का संदेश देते हैं। यशपाल ने प्राय: उन्हीं समस्याओं का चुनाव किया है, जो प्रगतिशील जीवन दृष्टि की प्रेरणा देने में सक्षम हैं। उन्होंने पाठक को परांपरागत रूढ़ियों से अलग करते हुए जीवन की कमजोरियों और मजबूरियों के वास्तविक संदर्भों से परिचित कराया। '*पहाड़ की स्मृति*' की पहाड़िन, '*धर्मयुद्ध*' के क्लर्क कन्हैयालाल, '*आतिथ्य*' के रामशरण, '*अपनी-अपनी जिम्मेदारी*' की साधारण मध्यवर्गीय कन्या प्रभा, '*हलाल का टुकड़ा*' के देशप्रेमी रावत और '*तुमने क्यों कहा था कि मैं सुंदर हूँ*' की क्षयरोग ग्रस्त माया और न जाने कितने ही ऐसे चरित्र यशपाल ने पेश किए, जो उनकी रचनात्मक कल्पना के श्रेष्ठ उदाहरण हैं। यशपाल के पात्रों में निजी जीवन की उलझनें बहुत ही कम मिलती हैं। उनमें एक प्रकार की सपाटता है। कहानी के स्थापत्य के मामले में यशपाल सतर्क कथाकार हैं। उनकी कहानियों का ढाँचा सुनिर्मित है। भाव, विचार और कहानियों के कथानक प्राय: इकहरे होते हैं, लेकिन मार्मिकता से भरे हुए होते हैं।

यशपाल का मुख्य व्यसन था अध्ययन, चिंतन और लेखन। उन्होंने विद्यार्थी जीवन में क्रांतिकारी नेताओं, मुक्ति संग्रामों एवं क्रांतिकारियों की गाथाएँ पढ़ी थीं, जिनका प्रभाव उनकी रचनाओं पर दृष्टिगत होता है। उपन्यास-साहित्य का अध्ययन भी उनका शौक था। हिन्दी और बंगला की रचनाओं के अतिरिक्त उन्होंने विदेशी कथा-साहित्य का भी पारायण किया है कुछ अनुवाद रूप में, तो कुछ मूल में। उन्होंने ड्यूमा, ह्यूगो और अनातोले फ्रांस को पढ़ा और उनके कथानक-शिल्प उनसे प्रभावित भी हैं। आतंकवादी पात्रों के अंकन में वह अपनी तुलना तुर्गनेव से करते हैं। दादा कामरेड और देशद्रोही में मजदूर-आंदोलन और हड़ताल के चित्रों को पढ़कर गोर्की के 'मदर' की याद आ जाना स्वाभाविक है। अपने कारा-प्रवास में उन्होंने कई विदेशी भाषाएँ फ्रेंच, इटालियन और रशियन सीखीं और इन भाषाओं के लेखकों की कुछ पुस्तकें मूल-भाषाओं में पढ़ीं। अनातोले फ्रांस की रचना '*ताइस*' मूल फ्रांसीसी भाषा में ही पढ़ी। अपने इस स्वाध्याय में उन्होंने अनेक कृतियों के गुणों को भी आत्मसात् किया। बर्नार्ड शॉ, इब्सन रसेल, हार्डी, गाल्र्सवर्दी, अनातोले फ्रांस, विक्टर ह्यूगो, मोपासां, टालस्टाय, चेखव और तुर्गनेव उनके प्रिय लेखक रहे हैं।

मार्क्सवादी दर्शन यशपाल की जीवन-दृष्टि का महत्त्वपूर्ण अंग है। उन्होंने मार्क्सवाद के आर्थिक पक्ष को ही नहीं, उसके राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण को भी अपनाया है। इसीलिए उन्होंने एक ओर पूँजीवादी व्यवस्था की कटु आलोचना की है, तो दूसरी ओर उत्पीड़ित वर्ग का क्रान्ति के लिए आह्वान किया है। वह मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने परिश्रम का फल पाने का समान अवसर होना चाहिए, उसे समाज के शासन और व्यवस्था में भाग लेकर आत्मनिर्णय का भी अधिकार हो। उन्होंने समाजवाद के इसी आदर्श को '*दादा कामरेड*' और '*देशद्रोही*' में यथास्थान व्यक्त किया है और मजदूर-संगठन तथा मजदूर-क्रांति पर बल दिया है। आरम्भ में उनका विचार था कि समाजवादी प्रणाली की स्थापना केवल क्रान्ति-मार्ग से हो सकती है, पर कदाचित् क्यूबा के उदाहरण से वह यह मानने लगे हैं कि उसकी स्थापना जनतन्त्रात्मक उपायों से भी हो सकती है। '*झूठा सच*' के ये शब्द यशपाल की इसी परिवर्तित धारणा की ओर संकेत करते हैं, "*गिल, अब तो विश्वास करोगे, जनता निर्जीव नहीं है। जनता सदा मूक भी नहीं रहती। देश का भविष्य नेताओं और मंत्रियों की मुट्ठी में नहीं है, देश की जनता के ही हाथ में है।*"

यशपाल का धार्मिक दृष्टिकोण भी मार्क्स के अनुसार है। वह मारिश के द्वारा पूर्वजन्म और कर्मफल में विश्वास रखने वालों को निर्बल बताते हैं। उन्होंने स्वयं भी कहा है, "*धर्म संबंधी प्राचीन धारणाएँ आज बेमौसमी बीज की तरह हमारे सामाजिक जीवन के खेत में केवल कूड़ा-कबाड़ पैदा कर रही हैं।*" वह नैतिकता का

www.neerajbooks.com

अध्यात्म और परलोक से कोई संबंध नहीं मानते। नैतिकता इस संसार के पारस्परिक व्यवहारों की मान्यता होती है। समाज में सांसारिक सफलता और व्यवस्था की चिन्ता ही नैतिकता को विकसित कर सकती है। इसलिए नैतिकता नितान्त मानुषिक और सांसारिक नियम है।

प्रारम्भ में यशपाल प्रगतिवादी आन्दोलन के केन्द्र में नहीं थे, धीरे-धीरे ही वे उसमें सम्मिलित हुए और कतिपय महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर उनका सदैव मतभेद बना रहा। यशपाल अपने कथा-साहित्य के लिए सामग्री अपने विशद जीवनानुभव से लेते रहे हैं। उनकी प्रेरणा का स्रोत उन्हें घेरे रहने वाली परिस्थितियाँ, व्यवस्था, आचार-व्यवहार और अन्तर्विरोध रहे हैं। यथार्थ जीवन से पृथक् होकर विचारों की कल्पना कर सकना उनके लिये असम्भव रहा है। सामयिक प्रश्नों का समाधान उन्होंने मार्क्सवाद में पाया है। इसीलिए उनके उपन्यासों में विचार-विश्लेषण और मार्क्सवादी सिद्धान्तों का प्रत्यक्ष आरोपण हुआ है। उनके समाधान भी सरलीकृत एवं अव्यावहारिक लगते हैं। उनके उपन्यासों में कतिपय त्रुटियाँ यौन-स्वच्छंदता, मनोविज्ञान की क्षीणता, वर्ग-स्थिति की यथार्थ प्रतीति का अभाव और वैयक्तिक प्रेम की अनन्यता का अभाव आदि पायी जाती हैं। उनकी राजनीतिक निष्ठा उनके सृजन की शक्ति भी है और उसकी सीमा भी। अपने सृजन-कर्म के संबंध में जो-कुछ यशपाल ने स्वयं लिखा है, यह उनके कृतित्व को समझने में पर्याप्त सहायक होगा, "*मैं सर्वसाधारण जनता को शोषित और अन्याय-पीड़ित समझता हूँ। इस अन्याय से जनता की मुक्ति का उपाय कम्युनिज्म की द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी विचारधारा को मानता हूँ। इस विचारधारा से मेरा सम्पर्क है। जनता में इस विचारधारा का स्पष्टीकरण और प्रचार मेरा देय है।*" उन्होंने अपने साहित्य में परम्परागत मान्यताओं और वर्गवादी दर्शन से टक्कर ली है और उन मतों, परम्पराओं, विचारों और सत्यों पर प्रहार किया है, जो शोषक-वर्ग ने अपनी सत्ता को चिरस्थायी बनाये रखने के लिए समाज में प्रतिष्ठित कर रखे हैं।

यशपाल की दृष्टि में कलाकृति का महत्त्व उसमें मूर्त सामाजिक संबंधों का है, क्योंकि वह साहित्य को पूर्ण रूप से भौतिकवादी मानते हैं। उनके मत में कला का उद्देश्य जीवन में पूर्णता की प्राप्ति है। "*कला का उद्देश्य जीवन में पूर्णता का प्रयत्न।........क्या यह अधिक अच्छा नहीं है कि वह विकास और नवीन कला के लिए आधार प्रस्तुत करे।*" वह साहित्यकार को अपने युग का सृष्टा मानते हैं, जो युग की सामयिक परिस्थितियों से विमुख होकर अंतर्लोक में विहार नहीं कर सकता। "*साहित्य समाज की वस्तु है और साहित्य के हितकर होने का अर्थ है कि वह समाज के लिए हितकर हो।*" इसीलिए वह अपनी ऐतिहासिक रचनाओं में इतिहास के यथार्थ का नहीं, उसमें उपलब्ध आर्थिक-सामाजिक संबंधों का अन्वेषण करते हैं और यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि हमारा अतीत भी हमारे वर्तमान की भांति वर्ग-मान्यताओं में आबद्ध था। उनकी ऐतिहासिक कृतियाँ वर्तमान के विश्लेषण से ही उद्भूत हैं। वह अपने उपन्यास की रचना किसी विचार-विशेष के प्रचार-प्रसार के लिए करते हैं। वह स्वयं लिखते हैं, "*मैं अनुभव करता हूँ कि अमुक प्रश्न उठाया जाना चाहिए अथवा अमुक समस्या की ओर ध्यान देना आवश्यक है अथवा अमुक समस्या का मेरे विचार से यह उत्तर होना चाहिए और मैं अपने साथियों, अपने समाज को यह बात सुनाने या सुझाने की आवश्यकता अनुभव करता हूँ, तो लिखना जरूरी हो जाता है।*" इस विचार को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए वह कथानक का गठन और फिर पात्रों की सृष्टि करते हैं, "*पहले विषय चुनता हूँ और विषय के अनुरूप कथानक और कथा की घटनाओं के अनुरूप पात्रों की कल्पना करता हूँ।*" उनके पात्र और उनका परिवेश स्वानुभव से चुने जाते हैं। अतः उनमें यथार्थोन्मुखता होती है। इतना ही नहीं, वह कथानक, पात्र एवं परिवेश को प्रामाणिक बनाने के लिए यथेष्ट श्रम करते हैं। '*दिव्या*' की रचना से पूर्व उन्होंने प्राचीन परिवेश, बौद्ध जीवन-पद्धति एवं युगीन आचार-व्यवहार के आकलन के लिए बहुत अध्यवसाय किया था। उन्होंने स्वयं इस संबंध में लिखा है, "'*दिव्या*' और '*देशद्रोही*' *में जिन परिस्थितियों का चित्रण है, वे इतिहास की पुस्तकों, एन्साइक्लोपीडिया तथा पठानों से बातचीत करके ही मैंने दी हैं।*"

यशपाल बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार हैं। उनके साहित्यिक कृतित्व के अन्तर्गत उपन्यास, कहानियाँ, यात्रा-वर्णन, नाटक, राजनीतिक निबन्ध तो आते ही हैं; उन्होंने देश की मुक्ति के लिए सशस्त्र क्रांति के आंदोलन की कहानी भी '*सिंहावलोकन*' नाम से आप-बीती रूप में लिखी है। इस प्रकार उनका कृतित्व महान है। अभिनन्दन ग्रन्थ के द्वारा तो वे सम्मानित किये ही गये हैं, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश एवं पंजाब सरकार ने उन्हें कई बार पुरस्कृत किया है। साहित्य अकादमी ने उन्हें उनकी पुस्तक '*मेरी, तेरी, अपनी बात*' पर अकादमी पुरस्कार प्रदान किया था।

यशपाल देश में नहीं, विदेशों में भी सम्मान प्राप्त लेखक हैं। उनकी अनेक रचनाओं का देशी तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। आपकी कहानियों के रूसी, अंग्रेजी, फ्रेंच और चैक भाषाओं के अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं। मलयालम, मराठी, गुजराती, तमिल और तेलगु में भी उनकी कृतियों के रूपान्तर हुए हैं। '*झूठा सच*' का रूसी भाषा में अनुवाद हुआ है। उसकी भूमिका में श्री चेलीशेव ने उसकी तुलना रूसी उपन्यासकार शोलोखोव के '*Quiet Flows the Donn*' से की है और '*झूठा सच*' को '*सोशलिस्ट रियलिज्म*' का जीवन्त उदाहरण कहा है। इस प्रकार उनका यश भारत की सीमाओं को लाँघ कर विदेशों में भी पहुँच गया है।

www.neerajbooks.com

यशपाल ने हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा दी; यद्यपि कहीं-कहीं गाँधीवादी आदर्शों की कटु आलोचना और मार्क्सवादी सिद्धांतों का विश्लेषण अखरता है, तथापि हिन्दी उपन्यास को विद्रोह, क्रांतिकारी स्वर देने का श्रेय यशपाल को ही है। उनके उपन्यासों में राजनीति का स्वर मुखर है। यशपाल का साहित्य पेट और रोटी के प्रश्न पर आधारित है। वह व्यभिचार के लिए भी आर्थिक व्यवस्था को उत्तरदायी मानते हैं। अत: मार्क्सवाद, क्रांति और विद्रोह उनके उपन्यासों के प्रमुख स्वर हैं। कहीं-कहीं अश्लीलता को स्पर्श करता हुआ रोमांस भी उनके उपन्यासों में मिलता है। पर जो-कुछ उन्होंने लिखा है, वह जीवन के अनुभूत तथ्यों, निराशा और असफलताओं का प्रतिफल है, स्वानुभव पर आधारित है, अत: उसमें सच्चाई, ईमानदारी और आक्रोश की तीव्रता है। यदि कोई बात खटकती है तो यही कि पूर्वाग्रह और सिद्धान्तवाद के कारण कला को आघात पहुँचा है, इसीलिए डॉ. वाजपेयी ने शंका व्यक्त की थी, "*सिद्धान्तों के गमले में रखे, चौबीस घण्टे की छाया में पले ये पौधे कहाँ तक बढ़ पाएँगे?*" पर '*झूठा सच*' को देखकर आशा होती है कि यशपाल अब पुरानी भूमि को त्याग कर विशुद्ध साहित्यकार की पट-भूमि पर पदार्पण कर रहे हैं। कुल मिलाकर उनकी कृतियों में समस्याओं का चित्रण, शोषण और उत्पीड़न का हृदयद्रावक दर्द और चिन्तनजन्य गंभीरता मिलती है। उन्होंने अपनी कृतियों में आदर्श की ज्योत्स्ना नहीं, क्रांति की मशाल जलायी है। अत: उन्हें प्रेमचंद की परम्परा से जोड़ना ठीक नहीं है। यशपाल प्रेमचंद की तरह समझौतावादी न होकर पाठकों को अपनी मान्यताओं से झुकाना चाहते हैं। उनकी रचनाओं में क्रांति और विद्रोह की धधकती आग है, समझौते की भीख नहीं। पर जन-साधारण के लिए हिन्दी-कथा-साहित्य का प्रतिनिधित्व करने वाले वह प्रेमचंद के बाद के कथाकार हैं। शांतिप्रिय द्विवेदी ने कहा है, "*भाषा और शैली की दृष्टि से''''''प्रेमचन्द ही नये युग में नया शरीर धारण करके पुन: सजीव हो उठे हों। यशपाल''''''''प्रेमचन्द की तिरोहित प्रतिभा की तरुण शक्ति हैं।*" डॉ. नगेन्द्र का कथन है, "*समाज के वैषम्य पर प्रहार करते समय यशपाल का प्रखर व्यंग्य अभिव्यक्ति का मेरुदण्ड बन जाता है। धर्म और नीति के रूढ़िग्रस्त जर्जर खंडहरों को धाराशायी कर समाजवादी अर्थव्यवस्था की नींव पर नव-निर्माण का आग्रह यशपाल की लेखन कला का अंग बन गया है।*"

प्रश्न 2. यशपाल के उपन्यास-साहित्य का परिचय देते हुए उनकी उपन्यास-कला की समीक्षा कीजिए।

उत्तर वर्ण्य-विषय के आधार पर उपन्यासों का विभाजन अनेक वर्गों में किया जा सकता है, यथा सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, आंचलिक आदि। यशपाल का आत्यन्तिक रूप से वर्गीकरण तनिक कठिन है। उनके उपन्यास न तो शुद्ध रूप से राजनीतिक हैं, न सामाजिक और न ऐतिहासिक, फिर भी जिस उपन्यास में जिस स्वर की प्रधानता है, उसी के आधार पर उसे राजनीतिक, सामाजिक अथवा ऐतिहासिक कहा जा सकता है। यशपाल के अधिकांश उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं का चित्रण होते हुए भी राजनीति का स्वर प्रधान है। उनमें देश की राजनीतिक समस्याओं, नीतियों, आन्दोलनों और विचारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति मिलती है। कथानक राजनीतिक घटनाओं से संबंधित है, तो पात्र राजनीति में सक्रिय भाग लेने वाले और विशिष्ट राजनीतिक मत के मानने वाले पुरुष और स्त्री हैं। उनका उद्देश्य भी किसी राजनीतिक सिद्धांत का प्रचार करना है, अत: उन्हें राजनीतिक उपन्यास ही कहा जाएगा। इन राजनीतिक उपन्यासों में प्रमुख हैं (1) दादा कामरेड, (2) देशद्रोही, (3) पार्टी कामरेड, (4) झूठा सच।

दादा कामरेड 1941 ई. में प्रकाशित इस घटना प्रधान राजनीतिक उपन्यास का संबंध देश की 1930 के आस-पास की राजनीतिक गतिविधियों और घटनाओं से है। उस समय देश का मजूदर वर्ग अपने विकास की प्रारम्भिक स्थिति में था और उनका संघर्ष बार-बार पराजित हो रहा था। उपन्यास का आरम्भ क्रांतिकारी हरीश के जीवन की एक अन्धकारपूर्ण रात से होता है, जब वह भागता हुआ एक मध्यवर्गीय परिवार की महिला यशोदा के यहाँ आश्रय लेता है। प्रात: होते ही वह यशोदा से विदा लेकर अपनी परिचिता शैलबाला के यहाँ पहुँच जाता है। शैल से घनिष्ठता के कारण उस पर लाँछन लगाकर उसे पार्टी से पृथक् करने की योजना बनाई जाती है। दादा और पार्टी के कुछ सदस्य उसे गोली मारकर समाप्त कर देना चाहते हैं। जब शैल को पता लगता है, तो वह हरीश को लेकर मसूरी चली जाती है, जहाँ वह मिराजकर नाम से रहने लगता है। यहीं उसका नैंसी से परिचय होता है। मृत्यु के मुख में फंसकर हरीश शैल को निरावरण देखने की इच्छा प्रकट करता है और शैल उसकी इच्छा तृप्त करती है। वह गर्भवती हो जाती है। शैल की प्रेरणा से काँग्रेसी पति रूढ़िवादी अमरनाथ की पत्नी पार्टी के कार्यों में सहयोग देने लगती है। हरीश मजदूर सभा का मंत्री बन जाता है, मजदूरों को उत्तेजित करके हड़तालें करवाता है। पार्टी उसके कार्यों से प्रभावित होती है, विशेषत: दादा। वह उसकी सहायता करते हैं। दादा पार्टी के साथ बैंक में डकैती करते हैं और उस रुपये से हरीश की सहायता करते हैं। मजदूरों की मांग स्वीकार हो जाती है। हरीश सफल हो जाता है। पर चोरी का रुपया उपयोग में लाने के अभियोग में उसे प्राणदण्ड मिलता है। गर्भवती शैल की स्थिति दयनीय हो उठती है, पिता क्रुद्ध होते हैं, पर वह अपना अस्तित्व बनाए रखती है। नाटकीय गति से उपन्यास का अन्त होता है, जब दादा आकर शैल का हाथ थाम लेते हैं और शैल हरीश की ज्योति को सदैव प्रज्वलित रखने के लिए दादा के साथ प्रस्थान कर जाती है।